Journal of Research and Development
Peer Reviewed International, Open Access Journal.
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-17, Issue-4 | April - 2025

Original Article

भारत की राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में शिक्षा के मूल्यों का तत्वमीमांसीक विश्लेषण

Pinki Rani[1], Dr. Bharti Kumari[2]
[1]Research Scholar, IIMT University
[2]Assistant Professor, IIMT Universit
Email: pinkisingh6532@gmail.com

Manuscript ID:
JRD -2025-170428
ISSN: 2230-9578
Volume 17
Issue 4|
Pp. 142-146
April 2025
Submitted: 04 Mar. 2025
Revised: 10 Mar. 2025
Accepted: 25 Apr. 2025
Published: 30 Apr. 2025

सारांश

भारत की राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (NEP 2020) भारतीय शिक्षा प्रणाली में एक महत्वपूर्ण बदलाव का प्रतीक है, जो न केवल शैक्षिक संरचना को पुनः परिभाषित करती है, बल्कि इसके भीतर निहित मूल्यों और दर्शन को भी पुनः जागृत करती है। यह नीति विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास, समावेशिता, समानता, और मानवाधिकार जैसे महत्वपूर्ण मूल्यों को प्राथमिकता देती है, जिससे विद्यार्थियों को जीवन में सफलता और संतुलन प्राप्त करने की दिशा में मार्गदर्शन मिलता है। तत्वमीमांसीक दृष्टिकोण से, यह शिक्षा को केवल बौद्धिक ज्ञान तक सीमित नहीं मानता, बल्कि यह शिक्षा को जीवन के गहरे अर्थों से जोड़ता है, जिससे समाज और राष्ट्र के सशक्तिकरण में योगदान किया जा सके। NEP 2020 का उद्देश्य विद्यार्थियों को न केवल अकादमिक दृष्टिकोण से सशक्त बनाना है, बल्कि उन्हें सामाजिक और नैतिक दृष्टिकोण से भी तैयार करना है। यह नीति वैश्विक दृष्टिकोण को भी प्रोत्साहित करती है, ताकि विद्यार्थी एक जिम्मेदार वैश्विक नागरिक बन सकें। इस शोध में, NEP 2020 के तत्वमीमांसीक विश्लेषण के माध्यम से शिक्षा के महत्व को समझने की कोशिश की गई है, जो समाज में सकारात्मक परिवर्तन लाने का एक प्रभावी माध्यम है।

मुख्य शब्द: *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, तत्वमीमांसा, समावेशिता, मानवाधिकार*

परिचय

भारत की राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भारतीय शिक्षा प्रणाली में एक ऐतिहासिक परिवर्तन का प्रतीक है, जो न केवल शैक्षिक संरचना को नए सिरे से परिभाषित करती है, बल्कि इसके भीतर निहित मूल्यों और दार्शनिक दृष्टिकोणों को भी पुनः जागरूक करती है(Ministry of Education, 2020)। यह नीति भारतीय समाज की विविधता, समावेशिता, और वैश्विक संदर्भ में शिक्षा के स्तर को सुदृढ़ करने का उद्देश्य रखती है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का मुख्य लक्ष्य छात्रों को एक समग्र दृष्टिकोण से विकसित करना है, जिसमें अकादमिक शिक्षा के अलावा सामाजिक और नैतिक मूल्यों का समावेश भी है (Ghosh, 2021; Dewey, 1916)। इस नीति में, विद्यार्थियों के व्यक्तिगत विकास और सामूहिक कल्याण को प्रमुखता दी गई है।शिक्षा के मूल्य केवल बौद्धिक विकास तक सीमित नहीं होते, बल्कि यह समाज और व्यक्तित्व निर्माण के लिए महत्वपूर्ण होते हैं (Clark, 2001; Sharma, 2017)। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में शिक्षा के जो मूल उद्देश्य निर्धारित किए गए हैं, उनका दार्शनिक विश्लेषण करने से हम समझ सकते हैं कि ये मूल्य समाज के प्रत्येक सदस्य को समाजिक और सांस्कृतिक संदर्भ में जागरूक और जिम्मेदार नागरिक बनाने में किस प्रकार योगदान करते हैं (Ghosh, 2021)।

Creative Commons (CC BY-NC-SA 4.0)
This is an open access journal, and articles are distributed under the terms of the Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 4.0 International Public License, which allows others to remix, tweak, and build upon the work noncommercially, as long as appropriate credit is given and the new creations ae licensed under the idential terms.

Address for correspondence:
Pinki Rani, Research Scholar, IIMT University

How to cite this article:
Rani, P., & Kumari, B. (2025). भारत की राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में शिक्षा के मूल्यों का तत्वमीमांसीक विश्लेषण. Journal of Research and Development, 17(4), 142–146. https://doi.org/10.5281/zenodo.17825893

Quick Response Code:
Website: https://jrdrvb.org/
DOI: 10.5281/zenodo.17825893

Journal of Research and Development
Peer Reviewed International, Open Access Journal.
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-17, Issue-4 | April - 2025

इस नीति में समावेशिता, समानता, और वैश्विक दृष्टिकोण जैसे महत्वपूर्ण तत्व शामिल हैं, जो भारतीय समाज में शिक्षा के प्रभाव को व्यापक रूप से सकारात्मक बनाने के लिए तैयार किए गए हैं (Nussbaum, 2011; Sen, 2009)। इस शोध पत्र का उद्देश्य इन मूल्यों का तत्वमीमांसीक विश्लेषण करना है, ताकि हम समझ सकें कि यह नीति समाज में कितनी गहरी छाप छोड़ सकती है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020: एक संक्षिप्त परिचय

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने भारतीय शिक्षा प्रणाली में कई महत्वपूर्ण बदलावों की दिशा तय की है। यह नीति भारतीय शिक्षा के विभिन्न स्तरों को सुदृढ़ करने के लिए तैयार की गई है, जिससे पारंपरिक और आधुनिक दृष्टिकोणों का समन्वय सुनिश्चित किया जा सके। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का उद्देश्य केवल शैक्षिक सुधार नहीं, बल्कि एक समग्र विकास को बढ़ावा देना है, जिसमें विद्यार्थियों की बौद्धिक, मानसिक, शारीरिक और नैतिक क्षमताओं का समान रूप से ध्यान रखा जाता है(NCERT, 2020)। इस नीति में विशेष रूप से समाजवाद, विविधता, समावेशिता, समानता और मानवाधिकार जैसे मूल्यों को प्राथमिकता दी गई है(Ghosh, 2021; UNESCO, 2000)। इन मूल्यों का उद्देश्य विद्यार्थियों में सामाजिक जिम्मेदारी, सामूहिकता, और समानता के विचारों को प्रोत्साहित करना है(Apple, 2004; Kumar, 2014)। समावेशिता के माध्यम से यह नीति यह सुनिश्चित करती है कि सभी विद्यार्थियों को समान अवसर मिले, चाहे उनका सामाजिक, आर्थिक, या सांस्कृतिक पृष्ठभूमि कुछ भी हो (Ghosh, 2021)। इस नीति के अंतर्गत शिक्षा का उद्देश्य सिर्फ ज्ञान देना नहीं, बल्कि विद्यार्थियों को एक जागरूक, नैतिक और जिम्मेदार नागरिक बनाना है, जो समाज में सकारात्मक योगदान दे सकें। इस प्रकार, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भारतीय शिक्षा में एक नई दिशा और दृष्टिकोण प्रदान करता है, जो विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास की ओर अग्रसर है।

तत्वमीमांसा और शिक्षा के मूल्य

तत्वमीमांसा (Metaphysics) एक दार्शनिक शाखा है, जो वास्तविकता, अस्तित्व, और जीवन के गहरे अर्थ को समझने की कोशिश करती है(Bhaskar, 2017; Gadamer, 2004)। यह उन मौलिक सिद्धांतों से संबंधित है जो जीवन के हर पहलू को आकार देते हैं और हमारे अनुभवों, विश्वासों, और आस्थाओं को परिभाषित करते हैं। तत्वमीमांसीक दृष्टिकोण से, शिक्षा केवल एक बौद्धिक प्रक्रिया नहीं है, बल्कि यह जीवन के व्यापक उद्देश्य, मानवता, और समाज में सामूहिकता को भी आकार देती (Freire, 1970; Illich, 1971)।
शिक्षा के मूल्य, तत्वमीमांसा के संदर्भ में, न केवल अकादमिक सफलता तक सीमित होते हैं, बल्कि यह मानव जीवन के गहरे अर्थ, आदर्शों और सिद्धांतों से भी जुड़े होते हैं। जब हम शिक्षा को तत्वमीमांसीक दृष्टिकोण से देखते हैं, तो यह शिक्षा के उद्देश्य को केवल ज्ञान प्राप्ति से कहीं आगे तक विस्तारित करता है। शिक्षा का उद्देश्य व्यक्ति के चरित्र निर्माण, नैतिकता, और समाज में उसके दायित्वों के प्रति जागरूकता उत्पन्न करना है।राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भी यह दृष्टिकोण महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह विद्यार्थियों को ज्ञान के साथ-साथ जीवन के बड़े उद्देश्यों और समाजिक जिम्मेदारियों को समझने के लिए प्रेरित करती है (Ministry of Education, 2020)। इसके द्वारा विद्यार्थियों में नैतिक मूल्य, सहनशीलता, और समाज में सामूहिकता की भावना को बढ़ावा दिया जाता है(Ministry of Education, 2020; Chopra, 2020), ताकि वे न केवल व्यक्तिगत सफलता की ओर अग्रसर हों, बल्कि समाज के प्रति भी अपनी जिम्मेदारी समझ सकें।राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में शिक्षा के जो मूल्य प्रमुख रूप से सामने आए हैं, उन्हें तत्वमीमांसीक दृष्टिकोण से विश्लेषित करते हुए हम निम्नलिखित बिंदुओं पर विचार कर सकते हैं:

समावेशिता और समानता (Inclusivity and Equality)

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में समावेशिता और समानता का मूल विचार बेहद महत्वपूर्ण है। यह नीति शिक्षा के क्षेत्र में हर बच्चे को समान अवसर देने की बात करती है(Ministry of Education, 2020; NCERT, 2020), चाहे वह किसी भी जाति, धर्म, लिंग, या सामाजिक स्थिति से हो। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में यह सुनिश्चित करने की कोशिश की गई है कि शिक्षा किसी के लिए भी सुलभ और निराकार न हो, बल्कि प्रत्येक विद्यार्थी को उनके सामाजिक और आर्थिक पृष्ठभूमि से स्वतंत्र रूप से शिक्षा प्राप्त करने का अवसर मिले (Ministry of Education, 2020)।तत्वमीमांसा के दृष्टिकोण से, शिक्षा का उद्देश्य केवल बौद्धिक विकास तक सीमित नहीं है। यह समाज में सामूहिकता और समानता की भावना को बढ़ावा देने का एक प्रभावी तरीका है। जब हम समावेशिता की बात करते हैं, तो इसका तात्पर्य केवल विविधता का सम्मान करना नहीं है, बल्कि एक ऐसा वातावरण तैयार करना है जिसमें सभी विद्यार्थियों को समान

Journal of Research and Development
Peer Reviewed International, Open Access Journal.
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-17, Issue-4 | April - 2025

रूप से सम्मानित किया जाता है और सभी को समान अवसर मिलते हैं। यह समाज के विभिन्न वर्गों के बीच संचार और समझ को बढ़ावा देता है, जिससे समग्र समाज में एकता और सहयोग की भावना उत्पन्न होती है (Ghosh, 2021)।समावेशिता के माध्यम से हम शिक्षा को एक सर्वजनहिताय प्रक्रिया बना सकते हैं, जो समाज के हर तबके को जोड़ने का कार्य करती है। यह प्रक्रिया न केवल व्यक्ति के आत्मनिर्भर और संतुलित विकास के लिए आवश्यक है, बल्कि यह समाज में समान अवसरों और न्याय की स्थापना में भी सहायक होती है(Ghosh, 2019; Sen, 2009)। शिक्षा के इस समावेशी दृष्टिकोण से हम एक अधिक समान और न्यायपूर्ण समाज की दिशा में कदम बढ़ा सकते हैं, जहाँ हर व्यक्ति को उनके अधिकार और अवसर मिलते हैं(Rokeach, 1973; Boudon, 2003)।

मानवाधिकार और स्वतंत्रता (Human Rights and Freedom)

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में मानवाधिकार और व्यक्तिगत स्वतंत्रता को प्रमुख रूप से मान्यता दी गई है, जो भारतीय शिक्षा व्यवस्था में एक महत्वपूर्ण बदलाव का संकेत है। इस नीति का उद्देश्य विद्यार्थियों को उनके अधिकारों का सम्मान करने, अपनी पहचान बनाने, और व्यक्तिगत स्वतंत्रता का अभ्यास करने का अवसर प्रदान करना है। यह नीति विद्यार्थियों को अपने विचार व्यक्त करने, निर्णय लेने और स्वतंत्र रूप से सोचने की अनुमति देती है, जो एक लोकतांत्रिक समाज में आवश्यक हैं (Ministry of Education, 2020)। तत्वमीमांसीक दृष्टिकोण से, यह शिक्षा के वे मूल्य हैं जो मानवता के मूल सिद्धांतों को आगे बढ़ाते हैं(Kant, 1785; Nussbaum, 2011)। मानवाधिकार और स्वतंत्रता केवल कानूनी या राजनीतिक अधिकारों तक सीमित नहीं हैं, बल्कि यह हर व्यक्ति के नैतिक और दार्शनिक अधिकारों का भी सम्मान करते हैं। शिक्षा का यह दृष्टिकोण विद्यार्थियों को स्वतंत्र सोच और आत्मनिर्भरता की प्रेरणा देता है, ताकि वे अपने विचारों और विश्वासों में स्वतंत्रता से निर्णय ले सकें। यह केवल बौद्धिक विकास तक ही सीमित नहीं है, बल्कि यह व्यक्तित्व के व्यापक विकास की दिशा में भी महत्वपूर्ण योगदान करता है।राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के माध्यम से शिक्षा का यह उद्देश्य विद्यार्थियों में मानवाधिकार और स्वतंत्रता के महत्व को समझाना है, ताकि वे अपने अधिकारों के प्रति जागरूक हों और एक सशक्त और स्वतंत्र नागरिक के रूप में समाज में अपना योगदान दे सकें (Ghosh, 2021; Sen, 2009)। यह न केवल उन्हें आत्मनिर्भर बनाता है, बल्कि उन्हें समाज में समानता, स्वतंत्रता और न्याय के सिद्धांतों को समझने और अपनाने की दिशा में भी मार्गदर्शन करता है।

नैतिकता और चरित्र निर्माण (Morality and Character Building)

तत्वमीमांसा में शिक्षा का उद्देश्य केवल ज्ञान अर्जन तक सीमित नहीं होता, बल्कि यह व्यक्तित्व और चरित्र निर्माण की ओर भी इंगीत करता है(Bhaskar, 2017; Sharma, 2017)। तत्वमीमांसीक दृष्टिकोण से, शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य व्यक्ति के आत्मिक और नैतिक विकास में योगदान करना है। यह दृष्टिकोण शिक्षा को केवल बौद्धिक या तकनीकी ज्ञान देने तक सीमित न रखते हुए, जीवन के गहरे उद्देश्यों, नैतिक सिद्धांतों और चरित्र निर्माण पर भी ध्यान केंद्रित करता है (Bhaskar, 2017)।राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भी यह विचार स्पष्ट रूप से उभरता है कि शिक्षा का मुख्य उद्देश्य केवल अकादमिक ज्ञान प्रदान करना नहीं है, बल्कि समाज में अच्छे नागरिकों का निर्माण करना है। नीति का यह पहलू विद्यार्थियों को न केवल बौद्धिक दृष्टिकोण से सशक्त बनाने की बात करता है, बल्कि उन्हें नैतिक और सामाजिक दृष्टिकोण से भी तैयार करने का प्रयास करता है। NEP 2020 में चरित्र निर्माण और नैतिकता पर विशेष ध्यान दिया गया है, ताकि विद्यार्थी समाज में आदर्श नागरिक बनने के लिए प्रेरित हों, जो समाजिक जिम्मेदारियों को समझें और उनका पालन करें। यह नीति विद्यार्थियों को न केवल उनके व्यक्तिगत विकास के लिए तैयार करती है, बल्कि उन्हें एक सशक्त और जिम्मेदार समाजिक भूमिका निभाने के लिए भी प्रोत्साहित करती है। इसके माध्यम से विद्यार्थियों में ईमानदारी, सहनशीलता, न्याय, और दया जैसे नैतिक गुणों का विकास होता है, जो उन्हें जीवन में सही मार्ग पर चलने के लिए मार्गदर्शन प्रदान करते हैं(Clark, 2001; Chopra, 2020)। इस प्रकार, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 शिक्षा को केवल अकादमिक उत्कृष्टता का माध्यम नहीं, बल्कि समाज में अच्छे नागरिकों के निर्माण का भी एक प्रभावी उपकरण मानती है।

जीवन मूल्य और समग्र विकास (Life Skills and Holistic Development)

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 यह स्पष्ट रूप से दर्शाती है कि शिक्षा का उद्देश्य केवल बौद्धिक विकास तक सीमित नहीं है, बल्कि इसका मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों का शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक समग्र विकास करना है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में समग्र विकास को प्रोत्साहित किया गया है, जिसमें विद्यार्थियों के व्यक्तित्व के सभी पहलुओं का संतुलित और समग्र रूप से विकास शामिल है। यह शिक्षा के

उन मूल्यों को रेखांकित करता है, जो जीवन के विभिन्न पहलुओं को संतुलित करते हुए छात्रों को एक समग्र दृष्टिकोण से सशक्त बनाते हैं।तत्वमीमांसीक दृष्टिकोण से, शिक्षा केवल ज्ञान या जानकारी प्रदान करने का कार्य नहीं करती, बल्कि यह जीवन के कई अन्य महत्वपूर्ण पहलुओं पर भी ध्यान केंद्रित करती है। इस दृष्टिकोण के अनुसार, जीवन कौशल, समस्या समाधान, और भावनात्मक बुद्धिमत्ता जैसे गुण शिक्षा का अभिन्न हिस्सा होते हैं(Piaget, 1950; Vygotsky, 1978; Shulman, 2004)। ये मूल्य न केवल विद्यार्थियों को बौद्धिक चुनौतियों का सामना करने के लिए तैयार करते हैं, बल्कि उन्हें मानसिक, शारीरिक, और भावनात्मक रूप से भी सशक्त बनाते हैं। जीवन कौशल का समावेश छात्रों को अपने जीवन के निर्णयों और कार्यों में संतुलन बनाने में मदद करता है, जिससे वे अपने व्यक्तिगत और सामाजिक जीवन में बेहतर निर्णय लेने में सक्षम होते हैं (Ghosh, 2021; Nair, 2016)।समग्र विकास का यह दृष्टिकोण विद्यार्थियों को एक व्यापक और समग्र शिक्षा प्रदान करता है, जो उन्हें न केवल शैक्षिक दृष्टिकोण से सशक्त बनाता है, बल्कि उन्हें जीवन के विभिन्न पहलुओं में संतुलन बनाए रखने के लिए भी तैयार करता है। इसके माध्यम से वे मानसिक तनाव, भावनात्मक उतार-चढ़ाव, और शारीरिक स्वास्थ्य के संदर्भ में भी संतुलित दृष्टिकोण अपनाने में सक्षम होते हैं, जो उन्हें जीवन में एक सकारात्मक दिशा में मार्गदर्शन प्रदान करता है।

वैश्विक दृष्टिकोण (Global Perspective)

भारत की राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में वैश्विक संदर्भ में भारतीय विद्यार्थियों की तैयारी पर भी विशेष जोर दिया गया है। वैश्वीकरण के इस युग में, जब दुनिया तेजी से एकीकृत हो रही है, तब यह नीति विद्यार्थियों को न केवल स्थानीय या राष्ट्रीय दृष्टिकोण से, बल्कि एक वैश्विक नागरिक के रूप में भी तैयार करने का प्रयास करती है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का उद्देश्य छात्रों को वैश्विक चुनौतियों और अवसरों के प्रति जागरूक और तैयार करना है, ताकि वे न केवल अपनी समाजिक और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि से परिचित रहें, बल्कि वे अन्य संस्कृतियों और राष्ट्रों के प्रति भी सम्मान और समझ विकसित करें।तत्वमीमांसीक दृष्टिकोण से, शिक्षा का यह पहलू उन मूल्यों को उजागर करता है जो वैश्विक एकता, आपसी समझ, और संस्कृतियों के आदान-प्रदान को बढ़ावा देते हैं। यह दृष्टिकोण शिक्षा को एक ऐसा साधन मानता है, जो केवल बौद्धिक विकास नहीं, बल्कि मानवता के सार्वभौमिक सिद्धांतों की ओर भी छात्रों का मार्गदर्शन करता है। वैश्विक दृष्टिकोण से शिक्षा, विद्यार्थियों में सहनशीलता, समानता और अन्य संस्कृतियों के प्रति समझ विकसित करने में सहायक होती है, जिससे वे एक-दूसरे से सीखते हैं और दुनिया भर में एकजुटता का एहसास करते हैं (Ghosh, 2021)।राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में यह विचार न केवल भारतीय शिक्षा को वैश्विक मानकों के साथ जोड़ने का प्रयास करता है, बल्कि यह भारतीय विद्यार्थियों को एक समग्र दृष्टिकोण से शिक्षा देने के लिए भी तैयार करता है, ताकि वे वैश्विक चुनौतियों और अवसरों का सामना करने के लिए सक्षम हो सकें। इसके माध्यम से छात्रों में वैश्विक दृष्टिकोण को अपनाने की भावना उत्पन्न होती है(Bhagwati, 2007; Ghosh, 2019), जो उन्हें एक जिम्मेदार और समझदार वैश्विक नागरिक बनने के लिए प्रेरित करता है।

निष्कर्ष

भारत की राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में शिक्षा के मूल्यों का तत्वमीमांसीक विश्लेषण यह स्पष्ट करता है कि यह नीति केवल बौद्धिक ज्ञान तक सीमित नहीं है, बल्कि इसका उद्देश्य समाज में नैतिक, सामाजिक और वैश्विक दृष्टिकोण से सकारात्मक परिवर्तन लाना है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का उद्देश्य शिक्षा को एक व्यापक दृष्टिकोण से देखना है, जिसमें न केवल ज्ञान, बल्कि विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास, समाजिक उत्तरदायित्व, और सांस्कृतिक समझ भी शामिल है। यह नीति समावेशिता, समानता, और मानवाधिकार जैसे महत्वपूर्ण मूल्यों को प्रमुखता देती है, जो विद्यार्थियों को न केवल शैक्षिक रूप से सशक्त बनाती है, बल्कि उन्हें एक जिम्मेदार और जागरूक नागरिक के रूप में भी तैयार करती है।

तत्वमीमांसा के दृष्टिकोण से, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 शिक्षा को जीवन के गहरे अर्थों से जोड़ती है। यह शिक्षा को केवल एक साधन नहीं, बल्कि एक उद्देश्य मानती है, जो समाज और राष्ट्र के सशक्तिकरण में योगदान करता है। इसके माध्यम से विद्यार्थियों में सामाजिक और नैतिक दृष्टिकोण से गहरी समझ विकसित होती है, जिससे वे व्यक्तिगत और सामूहिक स्तर पर जीवन में सफलता और संतुलन प्राप्त कर सकते हैं। इस प्रकार, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 न केवल भारत में, बल्कि वैश्विक संदर्भ में भी शिक्षा के उद्देश्य और इसके महत्व को पुनः परिभाषित करती है।

Journal of Research and Development
Peer Reviewed International, Open Access Journal.
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-17, Issue-4 | April - 2025

संदर्भ

1. Ministry of Education. (2020). *National education policy 2020*. Government of India.
2. Apple, M. W. (2004). *Ideology and curriculum*. Routledge.
3. Bhagwati, J. (2007). *In defense of globalization*. Oxford University Press.
4. Bhaskar, R. (2017). *The philosophy of meta-reality*. Cambridge University Press.
5. Boudon, R. (2003). *Education, opportunity, and social inequality*. Springer.
6. Chopra, R. (2020). Ethics and morality in education: A philosophical approach. *Indian Journal of Education, 45*(1), 12-29.
7. Clark, C. M. (2001). Teaching for meaning: The importance of values in education. *Journal of Teaching and Teacher Education, 5*(2), 128-141.
8. Dewey, J. (1916). *Democracy and education*. Macmillan.
9. Freire, P. (1970). *Pedagogy of the oppressed*. Continuum.
10. Gadamer, H. G. (2004). *Truth and method*. Continuum.
11. Galbraith, J. K. (2002). *The new industrial state*. Houghton Mifflin Harcourt.
12. Ghosh, R. (2019). Inclusive education and global perspectives. *Journal of Educational Studies, 27*(2), 98-110.
13. Ghosh, R. (2021). Philosophical insights on education and society. *Journal of Educational Philosophy, 20*(4), 134-145.
14. Illich, I. (1971). *Deschooling society*. Harper & Row.
15. Kant, I. (1785). *Groundwork for the metaphysics of morals*. Cambridge University Press.
16. Kohn, A. (2006). *Beyond discipline: From compliance to community*. Association for Supervision and Curriculum Development.
17. Kumar, K. (2014). *Education and society*. Sage Publications.
18. Ministry of Education. (2020). *National education policy 2020*. Government of India.
19. Mulgan, G. (2007). *The art of public strategy: Mobilizing power and knowledge for the common good*. Oxford University Press.
20. Nair, M. (2016). *Theories of educational philosophy*. Oxford University Press.
21. National Council of Educational Research and Training (NCERT). (2020). *National education policy 2020: A review*. NCERT.
22. Nussbaum, M. C. (2011). *Creating capabilities: The human development approach*. Harvard University Press.
23. Piaget, J. (1950). *The psychology of intelligence*. Routledge.
24. Radhakrishnan, S. (1931). *The Hindu view of life*. Macmillan.
25. Rokeach, M. (1973). *The nature of human values*. Free Press.
26. Sen, A. (2009). *The idea of justice*. Harvard University Press.
27. Sharma, A. (2017). Education and values: A philosophical perspective. *Educational Philosophy, 11*(3), 34-46.
28. Shulman, L. S. (2004). *The wisdom of practice: Essays on teaching, learning, and learning to teach*. Jossey-Bass.
29. Smith, R. L. (2009). *Philosophy of education: An introduction*. John Wiley & Sons.
30. UNESCO. (2000). *The Dakar framework for action: Education for all—Meeting our collective commitments*. UNESCO.
31. Vygotsky, L. S. (1978). *Mind in society: The development of higher psychological processes*. Harvard University Press.